IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरणीय समस्याओं का निराकरण : अद्वैत वेदान्त की दृष्टि

सौरभ द्विवेदी
शोध छात्र
दर्शन एवं धर्म विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी–221005
ई–मेल : sdwivedi258@gmail.com
मो0 : 9005308059

सारांश –

प्रस्तुत शोध–पत्र में अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र विषय के अन्तर्गत पर्यावरणीय समस्याओं का निराकरण अद्वैत वेदान्त दर्शन के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान समय में मनुष्यों ने अपने भौतिक जीवन की क्षणिक लालसाओं की पूर्ति हेतु पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुँचायी है। वैज्ञानिक क्रान्ति से स्वयं के कुकृत्यों को परिभाषित करते हुए अपने तुच्छ भौतिक सुखों की पूर्ति के प्रयोजनार्थ पर्यावरण का अंधाधुन भोग किया, जिससे पर्यावरण असंतुलन उत्पन्न हो गया।

इस प्रकार के असंतुलन से अत्याधिक भौतिक आपदाओं ने पृथ्वी के समस्त जीवों को गंभीर हानि पहुँचायी एवं उनके अस्तित्व पर भी संकट उत्पन्न हो गया है। इस पर्यावरणीय समस्याओं से निवारण हेतु अद्वैत वेदान्त की संकल्पना को अपनाया जा सकता है। अद्वैत वेदान्त में एक मात्र वास्तविक सत्य ब्रह्म को अपनाया गया है एवं संपूर्ण जगत को उसका आभास कहा गया है। ज्ञाता व ज्ञेय का अभेद माना है, भोक्ता एवं भोग्य में अभेद माना है; अद्वैत में भेदपरक दृष्टि को नकारा गया है। इस अभेद परक दृष्टि को अपनाकर व प्रत्येक जागृतिक वस्तु को ब्रह्म की प्रतीति माना जाए तो भोगवादी मानसिकता पर अंकुश लग सकता

है, जिससे पर्यावरण को भोगने की प्रवृत्ति पर भी नियंत्रण होगा। उक्त बिन्दुओं पर ही इस शोध पत्र के माध्यम से विवेचन किया गया।

मुख्य शब्दावली – (1) पर्यावरणीय, (2) अद्वैत वेदान्त, (3) संरक्षण, (4) मोक्ष, (5) साधन चतुष्टय।

परिचय –

पर्यावरणीय समस्याएं दिनोदिन विकराल रूप लेती जा रही है। अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, हरित ग्रह प्रभाव, जिससे पृथ्वी के तापमान में वेतहाशा वृद्धि हो रही है, जंगलों का नाश, नदियों का विलुप्ती के कगार पर पहुँचाना आदि अनेको समस्याएं पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुँचाने के कारण उत्पन्न हो रही है। जिससे मानव जीवन व अन्य दूसरों जीवों को बहुत सारे कष्टों का सामना करना पड़ रहा है तथा अनेको जीवों के अस्तित्व पर ही संकट के बादल छाए हुए है। विगत कुछ दशकों में पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुँचायी गयी है। पर्यावरण में संतुलन स्थापित होना व उसका पूर्णतः स्वस्थ्य बने रहना समस्त जीवों के लिए परमावश्यक है। प्रत्येक जीव का सर्वांगीण विकास एक संतुलित एवं स्वस्थ्य पर्यावरण में ही सुचारू रूप से संभव होता है। जीव के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य हेतु एक स्वस्थ्य वातावरण या पर्यावरण की आवश्यकता होती है। स्वस्थ्य व उत्तम वायु, जल एवं भोजन के सेवन से ही स्वस्थ्य शरीर व मन होता है व स्वस्थ्य मन से स्वस्थ्य चिंतन होता है तथा स्वस्थ्य चिंतन, मनन व ध्यान के माध्यम से ही जीव अपने मूल ध्येय की प्राप्ति करता है। इसलिए पर्यावरण को स्वस्थ्य एवं संतुलित रखना बहुत ही महत्वपूर्ण है। बिना पर्यावरण या प्रकृति के जीवन का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाता है। वैदिक परम्परा में भी पर्यावरण या प्रकृति के इस महत्व को समझते हुए प्रकृति की दो शक्तियों को माना गया है। प्रथम अन्तर्धि एवं द्वितीय परिधि – **"अन्तर्धि देवानाम परिधिर्मनुएयाणाम"**[1] अर्थात् प्रकृति या पर्यावरण की रक्षा करते हुए उसे ऊर्जावान बनाये रखना आवश्यक है, क्योंकि इससे पर्यावरणीय संतुलन एवं पर्यावरण की शुद्धता बनी रहती है, जिससे सम्पूर्ण जीव जीवित रहते है। इसलिए पर्यावरण का शमन व

संरक्षण की व्याख्या आदि काल से ही आवश्यक रही है एवं वर्तमान में भी इसकी उतनी ही उपादेयता माननी संपूर्ण जीव जगत के विकास हेतु आवश्यक है।

आज के परिदृश्य में पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुँचायी जा रही है। मनुष्य अपने स्वार्थो की पूर्ति हेतु एवं अपने भौतिक सुखों व ऐश्वर्य के लिए जीवनदायी प्रकृति या पर्यावरण को नष्ट करने में लगा हुआ है। इसके दुष्परिणामों से चितिंत हुए बिना आज वह जंगलों की कटाई, नदियों को प्रदूषित, पर्यावरण के संतुलन हेतु सहायक जीवों की हत्या, अपने क्षणिक सुखों के पूर्ति के लिए पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाले पदार्थो का अधिकाधिक मात्रा में प्रयोग आदि अनेकों कुकृत्यों से पर्यावरण के संतुलन हेतु सहायक जीवों की हत्या आदि अनेको कुकृत्यों से पर्यावरण को हानि पहुँचा रहा है। सरकार की अनेको योजनाओं के द्वारा व कड़े कानूनों के बावजूद भी पर्यावरण क्षति में किसी प्रकार की कमी नजर आती हुयी नहीं दिख रही है। वास्तव में योजना व कानून बना कर धूर्त मनुष्यों को नहीं रोका जा सकता है, बल्कि इसके लिए मनुष्यों को स्वयं यह अनुभव करना होगा कि क्या महत्वपूर्ण है ? क्षणिक सुखों व आराम पसंद जीवन या सम्पूर्ण पर्यावरण का नाश होना, जो पर्यावरण हमारे जीवन के लिए आवश्यक है, जिसके बिना हमारे अस्तित्व को सोचा ही नहीं जा सकता है। इस प्रकार के चिंतन को मनुष्यों में उत्पन्न करना होगा। तभी मनुष्यों में पर्यावरणीय क्षति के शमन व पर्यावरण संरक्षण की चेतना जागृत होगी। इस प्रकार की चेतना को वर्तमान समय में हो रहे पर्यावरणीय ह्रास को देखते हुए जगाना अति आवश्यक प्रतीत हो रहा है।

अद्वैत वेदान्त में पर्यावरणीय संरक्षण की संकल्पना –

पर्यावरणीय संरक्षण व संवर्धन के बारे में स्पष्ट रूप से अद्वैत वेदान्त में विचार नहीं किया गया है। परन्तु अद्वैत वेदान्त में मनुष्यों या अज्ञानी जीवों के कल्याणार्थ अवश्य ही सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए है। चूंकि किसी भी श्रेष्ठ चिंतन परम्परा का मूल प्रयोजन मनुष्यों को बेहतर जीवन जीने हेतु मार्ग प्रशस्त करना रहा है। प्रत्येक चिंतन प्रणाली का प्रयोजन मनुष्यों के जीवन के कल्याण हेतु अनेकों सिद्धान्तों व शिक्षाओं द्वारा श्रेष्ठ ज्ञान प्रदान करना

रहा है और इस श्रेष्ठ चिंतन प्रणाली वही है, जो प्रत्येक देश व काल में मनुष्यों के कल्याण हेतु उपयोगी हो। अद्वैत वेदान्त भी एक श्रेष्ठ चिंतन परम्परा रही है। जिसमें जीवों के कल्याण हेतु एक श्रेष्ठ चिंतन किया गया है। इसने जीवों को एक श्रेष्ठ व उपयोगी मार्ग को दिखाया है। पर्यावरण संरक्षण हेतु भी अद्वैत वेदान्त की अवधारणा को प्रयोग किया जा सकता है।

अद्वैत वेदान्त में एक मात्र सत्य ब्रह्म को माना गया। ब्रह्म निरूपण करते हुए कहा गया ''वह समस्त मायिक भेदों से रहित है। नित्य, सुखस्वरूप, कलारहित और प्रमाणदि अविषय है तथा वह कोई अरूप, अव्यक्त, अनाम और अक्षय तेज है जो स्वयं ही प्रकाशित हो रहा है।''[2] ब्रह्म को समस्त माया से रहित एवं आनन्द स्वरूप कहा गया है। ''सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म''[3] वस्तुतः जगत में विद्यमान सभी पदार्थ सजीव या निर्जीव एक उसी ब्रह्म की ही प्रतीति है। जगत में विद्यमान किसी भी पदार्थ को ब्रह्म से भिन्न नहीं माना गया है। सम्पूर्ण विश्व अज्ञानवश नानात्मक प्रतीत होता है ''यदिदं संकलं विश्व नानारूपं प्रतीतमज्ञानात। तत्सर्व ब्रह्मैव प्रत्यस्ताशेषभावनादोषम।।''[4] विवेकचूड़ामणि के अनुसार ज्ञान के अभाव में जगत को ब्रह्म से भिन्न समझने की भूल हो जाती है। जिस प्रकार सभी आभूषणों में स्वर्ण तत्व ही एकमात्र सत्य होता है ठीक उसी प्रकार जगत में भिन्न–भिन्न दिखाई देने वाले पदार्थ उस एक मात्र ब्रह्म के ही रूप है। प्रत्येक विद्यमान जीव, जन्तु, पादप, पाषाण, सरिताएं आदि समस्त जड़ व चेतन तत्त्व ब्रह्ममय है। ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ भी विद्यमान नहीं है। यदि प्रत्येक मनुष्य अद्वैत वेदान्त की इस अभेदवादी दृष्टि को अपनाता है तो वह स्वयं को व अन्य दूसरे वस्तुओं व जीवों को ब्रह्म स्वरूप ही मानेगा। इस स्थिति में व्यक्ति स्वयं को स्वयं के लिए भोगने की प्रवृत्ति से दूर होगा, क्योंकि सब कुछ अन्तोगत्वा ब्रह्म की प्रतीति मात्र ही है। इस प्रकार पर्यावरण को भोगने की दृष्टि को दूर करके हानि पहुँचाने से बचाया जा सकता है।

क्या वास्तव में अभेदवादी दृष्टि को किसी भी व्यक्ति में उत्पन्न करना सम्भव होगा ? अवश्य ही सम्भव है। आदि गुरू शंकराचार्य ने अद्वैत मत के प्रतिपादन द्वारा अभैद की दृष्टि को ही स्थापित किया है। इसके लिए शंकराचार्य जी ने ज्ञान मार्ग को सर्वोत्तम मार्ग बताया

है। जिसके अन्तर्गत ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति को आवश्यक माना है। ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति होने पर ही यह नानारूप जगत का भेद समाप्त हो जाता है और व्यक्ति अपने मूल स्वरूप को प्राप्त कर लेता है कि वह ब्रह्म है 'अहं ब्रह्मास्मि'। अद्वैत वेदान्त में अन्तःकरण से अवच्छिन चैतन्य को जीव या मनुष्य कहा गया है। अन्तःकरण जीव की उपाधि या विशेषण माना गया है। अन्तःकरण के भिन्न–भिन्न होने से जीव या मनुष्यों को भिन्न–भिन्न माना गया है। वस्तुतः जीव ब्रह्मस्वरूप ही है, परन्तु जब वह अन्तःकरण की उपाधि से मुक्त हो जाता है। अन्तःकरण जीव में अविद्या, अज्ञान या माया के कारण उत्पन्न हो जाता है तथा जिससे नानात्व का बोध उत्पन्न होता है; भेद की दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। अविद्या, अज्ञान या माया के निवारण होने पर जीव या मनुष्य ब्रह्ममय हो जाता है। श्रुति कहती है ''अयमात्मा ब्रह्म''[5] अर्थात् जो जीव का आत्मा माया या अविद्या के बंधन से मुक्त हुयी वह स्वयं ब्रह्म रूप हो गयी है। ''ब्रह्मैव हि मुक्तयवस्था''। इस मुक्त आत्मा के लिए भौतिक सुखों की पूर्ति हेतु पर्यावरण को नष्ट करते हुए भोगने की प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है।

ब्रह्मज्ञान वस्तुतः यथार्थ ज्ञान है, अर्थात् जीव या मनुष्य को जब अपने स्वः की अनुभूति हो जाती है, तब वह ब्रह्मज्ञान या मोक्ष आदि कहा गया है, जो अविद्या के नष्ट होने पर ही सम्भव होता है। पद्याचार्य ने कहा ''मिथ्याज्ञान की निवृति ही मोक्ष है।''[6] मोक्ष के बारे में एक सुन्दर व स्पष्ट वर्णन करते हुए राधाकृष्ण कहते है ''मोक्ष एक प्रकार की अन्तर्दृष्टि है जो जगत के चित्र को ही बदल देती है। सब वस्तुओं का नए सिरे से निर्माण करती है, किन्तु यह निर्माण मुक्तात्मा के दृष्टिकोण से सम्बन्धित होता है न कि वस्तुओं के रूप से सम्बन्धित। मुक्तात्मा के लिए अविद्या निष्क्रिय हो जाने से मिथ्या सुख–दुःखादि भी व्यर्थ हो जाते है। प्रपंच रूप जगत भ्रमित नहीं करता, किन्तु जगत का अस्तित्त्व पूर्ववत् बना रहता है। यदि ऐसा न हो तो एक व्यक्ति के द्वारा मोक्ष प्राप्त किये जाने पर सम्पूर्ण जगत विनष्ट हो जाता है।''[7] अद्वैत वेदान्त में जब मनुष्य या जीव इस उक्त स्थिति को प्राप्त कर लेता है तो जगत भाव से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्ति कर लेता है। इस मोक्ष भाव में वह समस्त कुकृत्यों को त्याग

कर सम्पूर्ण जगत के कल्याण हेतु कार्य करता है एवं किसी को कोई भी क्षति या हानि नहीं पहुँचाता है। इस प्रकार प्रकृति का संरक्षण व संवर्धन किया जा सकता है।

अद्वैत वेदान्त के अनुसार केवल ज्ञान मार्ग से ही मोक्ष प्राप्ति होती है। बिना ज्ञान के मोक्ष नहीं मिलता। अद्वैत वेदान्त में ज्ञान प्राप्ति हेतु श्रवण, मनन व निदिध्यासन को आवश्यक माना है। श्रवण का अर्थ है अद्वैतियों के सिद्धांतों को ध्यानपूर्वक सुनना, मनन का अर्थ है उन सिद्धान्तों का गंभीरतापूर्वक चिंतन व मनन करना तथा निदिध्यासन का अर्थ है उन सिद्धान्तों का बार–बार अभ्यास करना। अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्तों व अवधारणों का ज्ञान प्राप्त करने से पूर्व साधक के लिए अधिकारी बनना आवश्यक माना गया है। अधिकारी बनने हेतु चार प्रकार की योग्यताओं का उल्लेख किया गया है।

(i) नित्यानित्यवस्तु विवेक – नित्य एवं अनित्य वस्तु में भेद करने की योग्यता होना आवश्यक है। क्या उचित व अनुचित है, क्या उपयोगी व अनुपयोगी है, क्या तत्त्व व अतत्त्व है ? इसके बारे में भेद करने की योग्यता एक अद्वैत वेदान्ती जिज्ञासु में होना आवश्यक है।

(ii) इहामुत्रार्थ फलभोग विराग – सांसारिक एवं पारलौकिक दोनों के फलों के भोग से विराग होना अधिकारी हेतु आवश्यक माना गया है।

(iii) शमदमादिसाधन सम्पत – इस योग्यता के अन्तर्गत छः प्रकार की सम्पति के बारे में उल्लेख किया गया है, जो निम्नवत है–

(1) शम – शम का अर्थ है मन का स्थिर और शान्त रहना।

(2) दम – बाह्य वृत्तियों के दमन करने को दम कहा गया है।

(3) उपरति – भोगों से, वासना–तृष्णा से तथा राग द्वैषों से उपशम अर्थात् इन सब से हमेशा दूरी रखना उपरति है।

(4) तितिक्षा – द्वन्द्वों को सहन करना, विपरीत परिस्थितियों में समान रहना अर्थात् सुख–दुःख, सर्दी–गर्मी, जय–पराजय, नित्य–अनित्य आदि में समान बने रहना ही तितिक्षा

है।

(5) श्रद्धा – वेदशास्त्र तथा आचार्यो के वाक्यों में भक्ति रखना ही श्रद्धा है। 'श्रद्या सत्यमाप्यते' अर्थात् श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।

(6) समाधान – लक्ष्य प्राप्ति में चित की एकाग्रचितता ही समाधान है।

(iv) मुमुक्षत्व – अंहकार से लेकर देहपर्यन्त जितने अज्ञान कल्पित बंधन है, उन्हें अपने स्वरूप के ज्ञान द्वारा त्याग ने की इच्छा ही मुमुक्षुत्व है।

अद्वैत वेदान्त में साधन चतुष्टय से सम्पन्न व्यक्ति ही वास्तविक अर्थो में अद्वैत वेदान्त के मार्मिक व गंभीर सिद्धान्तों का अध्ययन कर सकता है एवं मोक्ष–मार्ग में प्रवृत हो सकता है। अपरोक्षानुभूति में आचार्य शंकर ने कहा भी है ''जो साधक अपना कल्याण चाहते है, वे निश्चितरूप से साधन–चतुष्टय से सम्पन्न होकर मोक्ष मार्ग–पथ के पथिक बनते है।''[8]

इस प्रकार अद्वैत वेदान्त के अधिकारी की योग्यता प्राप्त होने पर साधक की सम्पूर्ण कृप्रवृत्तियां, भोग–वासना की लालसा, क्षणिक सुखों की प्राप्ति, किसी भी हेय व कुकृत्य करने की प्रवृत्तियाँ समाप्त हो जाती है। वह स्वयं के मोक्ष प्राप्ति हेतु एवं अन्य जीवों के कल्याणार्थ हेतु प्रवृत हो जाता है। इन विशेषताओं को साथ कोई भी व्यक्ति किसी भी दशा में पर्यावरण को हानि या क्षति नहीं पहुँचा सकता, अपितु प्रत्येक वस्तु को ब्रह्ममय मानते हुए सम्पूर्ण पर्यावरण व प्रकृति का संरक्षण व संवर्धन करता है।

निष्कर्ष –

इस शोध–पत्र में अद्वैत वेदान्त की विचारधारा व सिद्धान्तों को स्वीकार व अनुसरण करने पर पर्यावरण की जो अपूर्ण क्षति हो रही है, उस पर नियंत्रण किया जा सकता है। भोगी एवं विलासी व्यक्तियों को सन्मार्ग पर लाकर सत्य व यथार्थतः का ज्ञान प्राप्त करा कर उनकी मोक्ष मार्ग में प्रवृति करायी जा सकती है। जिससे पर्यावरण के अधिकाधिक दोहन पर

अंकुश लगेगा एवं एक स्वस्थ्य व विकसित पर्यावरण का निर्माण होगा। सभी जीवों को समान रूप से इस प्रकृति में जीवित रहने का अधिकार प्राप्त होगा। एक स्वस्थ्य पर्यावरण एवं प्रकृति में एक स्वस्थ्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास होगा, जिससे एक व्यवस्थित, मजबूत व विकसित समाज व राष्ट्र का निर्माण होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. अथर्ववेद, 8/2/25।
2. शंकराचार्य विरचित विवेक – चूड़ामणि, अनु0 स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 2010, पृ0सं0 170।
3. तैत्तिरीयोपनिषद 2/1।
4. शंकराचार्य विरचित विवेक चूड़ामणि, अनु0 – स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, पृ0सं0 164।
5. वृहदारण्यकोपनिषद, 2/5/19।
6. मिथ्यानि वृतिमात्रम मोक्ष : पद्याचार्य।
7. बोहरा, रवीन्द्र, वेदान्त दर्शन और मोक्ष चिन्तन, डायमंड पॉकेट बुक्स लि0, नई दिल्ली, पृ0सं0 84।
8. शंकराचार्य, अपरोक्षानुभूति, अनु0 रवीन्द्र बोहरा, वेदान्त दर्शन और मोक्ष चिन्तन, पृ0सं0 97।